P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-II * ISSUE-VI February-2015
E: ISSN NO.: 2349-980X

भारतेन्दु युगीन कवियों का व्यंग्य

मनोज कुमार
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
हिन्दू महाविद्यालय,
सोनीपत।

सारांश

भारतेन्दु जी सच्चे अर्थों में युग पवर्त्तक थे। जिस समय भारतवर्ष में अंग्रेजी का प्रभाव खूब बढ़ता जा रहा था उसी समय भारतेन्दु ने हिन्दी भाषा और साहित्य को अपनी बहुमुखी रचनाओं से समद्ध किया। इस काल के कवियों न व्यंग्यपरक रचनाओं के महत्व को समझते हुए इनके माध्यम से अंग्रेजी शासन, पाश्चात्य सभ्यता, सामाजिक अन्धविश्वासों एवं रूढ़ियों पर करारी चोट की। इस दिशा में भारतेन्दु का योगदान सर्वाधिक है। उन्होंनें मुकरियों के द्वारा पुलिस, कानून तथा खिताब पाने वाले और शराब पिने वालों को व्यंग का लक्ष्य बनाया। एक मुकरी मे प्रच्छन्न रूप से 'सितारे हिन्द' का खिताब पाने वाले राजा शिवप्रसाद पर भी कटाक्ष है। अंग्रेजों पर प्रच्छन्न रूप से प्रहार करने के लिए उन्होनें भारत दूर्दशा रूपक की रचना की। अन्धेर नगरी में व्यंग को हास्य के आवरण में छिपाकर अंग्रेजी राज्य पर आक्षेप किया गया जो सिधे आक्षेप की अपेक्षा बहतर भी था और सशक्त भी। अंग्रेज कुशल शासन व्यवस्था कर रहे थे पर भीतर ही भीतर भारत का आर्थिक शोषण भी कर रहे हैं। 'अंग्रेज राज सुख साज' निम्न पंक्तियों के माध्यम से अंग्रेजी शासन पर करारा व्यंग्य किया है। रीतिकालोन कवियों ने समाज की ओर से अपनी आँखें बंद कर ली थी किन्तु भारतेन्दु युगीन कवियों ने सामाजिक जीवन का यथातथ्य निरूपण करने में रूचि दिखाई। भारतेन्दु, प्रताप नारायण मिश्र, प्रेमघन और बालमुकुंद गुप्त ने राजभक्ति से पूर्ण कविताओं के साथ–2 राजनीतिक, सामाजिक, अंग्रेजी शासन तथा अन्य विकृतियों पर प्रहार करके जनता की आँखें खोली। सच्चे अर्थों में इन कवियों को हिन्दी काव्य जगत में महत्वपूर्ण स्थान दिलाने में, इनकी व्यंग्य रचनाओं का ही योगदान है।

मुख्य शब्द : उद्भावना, वैषम्य, भर्त्सना, अवनत, टिकस, आक्षेप, नृशंस, मुकरी, व्याध्यिों, उन्मूलन, बिदेस, अपकर्ष, गृहीत।

परिचय

भारतेन्दु की अधिकांश काव्य रचनाएं वैष्णव–भक्ति से सम्बन्धित हैं। किन्तु कवि के रूप में भारतेन्दु का महत्व इन रचनाओं के कारण नहीं हैं। उनकी वही रचनाएं प्राणवान् बन सकी हैं, जो यथार्थ के साथ जुड़ी हैं तथा जिनमें युग की विकृतियों पर प्रहार करने के लिए व्यंग्य के विभिन्न रूपों को अपनाया गया हैं। जन–सामान्य में जागृति उत्पन्न करने के लिए उन्होंने व्यंग्य को रूपायित किया। व्यंग्य के क्षेत्र में नवीन प्रयोग किये तथा नवीन माध्यमों को अपनाया। उन्होंने स्वतन्त्र रूप से भी व्यंग्य कवितायें लिखीं तथा अपने नाटकों में भी व्यंग्य कविताओं के द्वारा विभिन्न लक्ष्यों पर प्रहार किया। व्यंग्य की दृष्टि स उनकी नाटकों की कवितायें अधिक महत्वपूर्ण हैं। स्वतन्त्र कविताओं में 'मुकरी' के द्वारा प्रहार, उनकी नवीन उद्भावना हैं।

भारतेन्दु ने राज–भक्ति से पूर्ण कवितायें भी लिखी। इसका कारण था कि मुसलमानों की भांति अंग्रजों ने हिन्दु–जनता पर अत्याचार नहीं किये बल्कि शिक्षा का प्रसार किया और विज्ञान की अन्य उपलब्धियां भारत को प्रदान कीं। इसीलिए भारतेन्दु ने अपनी प्रारम्भिक रचनाओं में उनकी प्रशंसा की हैं। डॉ0 रामविलास शर्मा का भी यही मत है।[1] किन्तु धीरे–धीरे वे विदेशी शासन से असंतुष्ट हो गये। उनका राज–भक्ति का स्वर क्रमशः क्षीण होता चला गया और सन् 1874 के पश्चात् उनकी रचनाओं में राष्ट्रीयता का स्वर प्रमुख हो गया। किशोरी लाल गुप्त ने भी इस तथ्य की पुष्टि की है।[2] राष्ट्रीयता की भावना के विकास के साथ ही साथ उनके काव्य और नाटकों में व्यंग्य का स्वर ही मुख्य हो गया। राष्ट्रीयता के संचार के पश्चात् भी इस तथ्य के प्रति सचेत होने पर कि अंग्रेज किसी प्रकार भी भारतीयों के शुभचिन्तक नहीं हैं, उनके लिये खुलकर अंग्रेजों का विरोध करना सम्भव नहीं था। इस विरोध के लिए उन्होंने दो साधनों की ओर ध्यान दिया। एक तो उन्होंने अंग्रेजी शासन के दोषों और

दुर्नीतियों पर प्रहार करने के लिये साहित्य में व्यंग्य को अपनाया। दूसरे उन्होंने जनता को लोक–गीतों के माध्यम से अंग्रेजी–शासन तथा समाज में व्याप्त अन्य विषमताओं के प्रति सचेत किया।

भारतेन्दु ने स्वयं तो लोक–साहित्य रचा ही, अन्य लेखकों से भी उन्होंने आग्रह किया कि जातीय–संगीत की छोटी–छोटी पुस्तकें रचकर सारे देश, गांव–गांव और साधरण लोगों में उनका प्रचार करें। ग्राम–गीतों का जो प्रभाव चित्त पर होता है वह साधारण शिक्षा से नहीं होता। वह जानते थे बिना इस विशाल जन–समुदाय में आन्दोलन किये देश की उन्नति असम्भव है।[3] राजनीति से सम्बन्धित लक्ष्यों पर प्रहार करने के लिए भारतेन्दु ने व्यंग्य को विडम्बना और वैदग्ध्य का रूप दिया। अंग्रेजों की नीति पर सीधे ही आपेक्ष और भर्त्सना करना सम्भव नहीं था, क्योंकि सरकार ने 'वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट' पास करके समाचार पत्रों और पत्रिकाओं पर प्रतिबंध लगा दिया था। अतः उन्होंने विडम्बना और वैदग्ध्य के द्वारा ही, मधु में डुबोकर सशक्त प्रहार किये हैं। ब्राह्मणों और पंडितों के वास्तविक चरित्र को निरावरण करने के लिए इन्होंने उनके आदर्श और यथार्थ चरित्र म वैषम्य दर्शाकर चोट की है। अन्य समाजिक व्याधियों पर उन्होंने आक्षेप ही करके अपने आक्रोश को अभिव्यक्ति दी हैं। अंग्रेजी पढ़कर, ग्रेजुएट बनकर नवयुवक बेकार घूम रहे थे। सरकारी नौकरियां इतनी नहीं थी, और नौकरी के अतिरिक्त अन्य कोई काम–धन्धा करनें में व अपना अपमान समझते थे। झूठी शान में ऐसे बेकार घूमते हुए ग्रेजुएटों पर भी वे मुकरी के द्वारा चोट करते हैं–

तीन बुलाए तेरह आवैं।
निज नित पिता रोइ सुनावैं।।
आंखौ फूटे भरा न पेट।
क्यों सखि सज्जन नहिं ग्रेजुएट।।[4]

यहां अंतिम पंक्ति में उन्हें 'सज्जन' कहकर विडम्बना और वैदग्ध्य के द्वारा प्रहार किया हैं।

इसी प्रकार उन्होंने मुकरियों के द्वारा पुलिस, कानून तथा खिताब पाने वालों और शराब पीने वालों को व्यंग्य का लक्ष्य बनाया है। अंग्रेजी राज्य पुलिस राज्य था। पुलिस के आतंक ने साधारण जन–समाज को भयभीत बनाया हुआ था। इसलिए भारतेन्दु ने मुकरी के द्वारा विडम्बनात्मक रूप से प्रहार करते हुए पुलिस के कारनामों को भी उजागर कया हैं। कानूनों को जनता की सुख–सुविधा के लिए लागू किया जाता हैं, परन्तु यहां बात उल्टी थी। नित नये–नये कानून बनाकर, अंग्रेजी सरकार जनता की शक्ति और सामर्थ्य को निर्जीव बना रही थी। भारतेन्दु ने सीधे ही अंग्रेजी सरकार पर चोट न करके, अंग्रेजी शासन का संचालन करने वाले अमलों, पुलिस और कानूनों पर व्यंग्य–बाण छोड़े हैं। इसी प्रकार उन्होंने खिताब बांटकर भारतीय राजा महाराजाओं को खरीदने वाले अंग्रेज शासकों पर प्रहार न करके खिताब पाले वाले चाटुकारों पर ही चोट की है। एक मुकरी में प्रच्छन्न रूप से 'सितारे हिन्द' का खिताब पाने वाले राजा शिवप्रसाद पर भी कटाक्ष है। अंग्रेजों के आगमन के साथ–साथ समाज में शराब का प्रचलन भी बढ़ गया था। विशेष रूप से नवयुवक शराब पी–पीकर अकर्मण्य और आलसी बनते जा रहे थे। अतः समाज में शराब का अधिकाधिक प्रचलन भी भारतेन्दु की चिन्ता का विषय था। इन मुकरियों में उन्होंने प्रारम्भ की तीन पंक्तियों में आक्षेप द्वारा उपहास किया है तथा अंतिम पंक्ति में विडम्बना और वैदग्ध्य के द्वारा प्रहार करके व्यंग्य को सशक्त बनाया हैं।

अंग्रेजों पर प्रच्छन्न रूप प्रहार करने के लिए ही उन्होंने 'भारत दुर्दशा' रूपक की रचना की। 'भारत दुर्दशा' अंग्रेजी राज्य की अप्रत्यक्ष रूप से कटु और सच्ची आलोचना है। भारत दुर्दैव अंग्रेजी राज्य का ही प्रतीक है। भारत दुर्दशा देशभक्त भारतेन्दु के व्यथित हृदय की पुकार हैं।[5]यह प्रतीकों को लेकर लिखा हुआ एक सशक्त रूपक है, जिसमें अंग्रेजी राज्य तथा अन्य सामाजिक व्याधियों पर तीखे प्रहार किये गये हैं। पहले अंक में एक योगी गाता हैं–

अंग्रेज राज सुख सजे सब भारी।
पै धन बिदेस चलि जात इहै अति ख्वारी।।
ताहू पै महंगी काल रोग बिस्तारी।
दिन–दिन इने दुख ईस देत हा हा री।।
सबके ऊपर टिक्कस की आफत आई।
हा हा। भारत दुर्दशा न देखी जाई।।[6]

प्रारम्भ में अंग्रेजों की प्रशंसा करके कवि ने अगली पंक्तियों के आक्षेप की तीव्रता को हल्का कर दिया हैं। अंग्रेजों की खुलकर आलोचना करना सम्भव नहीं था, इसके अतिरिक्त यह भी सत्य था कि अंग्रेजी राज्य में उपलब्ध सुख–सुविधा के वैज्ञानिक साधनों ने अंग्रेजों कूटनीतिपूर्ण आर्थिक शोषण पर पर्दा डाल दिया था। भारतेन्दु स्वीकार करते हैं कि अंग्रेजी–राज्य में सुख के साधन उपलब्ध हैं। पर इससे क्या? हमारा धन तो वे लूटकर अपने देश में भर रहे हैं। उस पर महंगाई, अकाल, महामारी से जनता ग्रसित है। पर अंग्रेजी शासकों को इसकी चिन्ता नहीं हैं। इन्होंने ऊपर से और भारीभरकम टैक्स लगाकर 'भारत की दुर्दशा' में रही सही कमी पूरी कर दी है। अंग्रेजी राज्य की अव्यवस्था पर प्रहार करने के लिए ही भारतेन्दु ने 'अंधेर नगरी' प्रहसन की रचना की। अंग्रेजी राज्य का ही दूसरा नाम 'अंधेरनगरी' हैं। इस प्रसहन में उन्होंने घासीराम चने वाले और चूरन वाले के माध्यम से हाकिमों, अमलों, महाजन, लाला, एडिटर, साहब, पलिस, सभी पर व्यंग्यात्मक बाण छोड़े हैं। लोक गीतों की पद्धति पर रचे हुए इन लटकों के द्वारा वे जन–साधारण को उपर्युक्त लक्ष्यों के वास्तविक कारनामों के प्रति सचेत करना चाहते थे।

घासीराम, चने जोर गरम वाला चिल्लाता है–
चना हाकिमों सब जो खाते।
सब पर दूना टिकस लगाते।।[7]

यहां हास्य के आवरण में छिपाकर अंग्रेजी राज्य के हाकिमों पर आक्षेप किया गया है। हाकिमों पर प्रहार करने के लिए हास्य का यह आवरण सीधे ही आक्षेप करने की अपेक्ष बेहतर भी था और सशक्त भी।

भारतेन्दु ने सुधार की भावना से प्रेरित होकर, युग की राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक विकृतियों के प्रति जन–साधारण को जागृत करने के लिए व्यंग्य का

सहारा लिया। कवि के आक्रोश की मात्रा के अनुसार तथा प्रहार के विभिन्न लक्ष्यों के अनुरूप व्यंग्य ने भी विविध रूप धारण किए। भारतेन्दु के व्यंग्य–काव्य में, व्यंग्य के लगभग सभो रूपों का समावेश हुआ है। कटाक्ष, आक्षेप, भर्त्सना, अपकर्ष, खिल्ली, वैदग्ध्य, विडम्बना, परिहास 'पैरोडी', व्यंग्यत्मक–चित्रण, इन सभी रूपों द्वारा उन्होंने विभिन्न लक्ष्यों को धराशायी करने के लिए व्यंग्य के कई वैदग्ध्य के द्वारा किया। लक्ष्य को पूर्ण रूप से धराशायी करने के लिए व्यंग्य के कई रूपों का एक साथ भी समावेश हुआ है। कई स्थलों पर उन्होंने विडम्बना और वैदग्ध्य के द्वारा एक साथ ही चोट की है। विशेष रूप से अंग्रेजी शासन में व्याप्त अव्यवस्था पर उन्होंने वैदग्ध्य, विडम्बना और व्यंग्यात्मक चित्रण के द्वारा प्रहार किया। कहीं–कहीं अपकर्ष के द्वारा भी अंग्रेजों और उनके पिट्ठुओं का उपहास करके उनके सम्मान को मिट्टी में मिला दिया हैं। 'बंदर सभा' पैरोडी लिखकर उन्होंने अंग्रेजों और उनके चाटुकारों की धज्जियां उड़ाई हैं। धर्म के ठेकेदारों पर उन्होंने वैदग्ध्यात्मक व्यंग्य के द्वारा भी चोट की तथा भर्त्सना द्वारा भी उनका पहास किया। मुख्यतः उनके आदर्श और यथार्थ चरित्र में वैषम्य दिखाकर ही उनकी नग्न वास्तविकता को निरावरण किया हैं। अन्य सामाजिक व्याधियों और विसंगितयों पर उन्होंने आक्षेप ही कियो हैं। साहित्यिक क्षेत्र में उर्दू पर चोट करने के लिए उन्होंने 'खिल्ली' का प्रयोग किया।

वैदग्ध्य और विडम्बना का आश्रय लेकर किया गया प्रहार अधिक गहरा और सशक्त रहा हैं। व्यंग्यात्मक–चित्रण तथा आदर्श और यथार्थ चरित्र में वैषम्य दिखाकर भी, लक्ष्य को धराशायी करने में क्षमता रही हैं। आक्षेप और भत्सना द्वारा किया गया उपहास अपेक्षाकृत कम गहरा और कम चोट करने वाला रहा हैं। भारतेन्दु के परवर्ती अन्य सहयोगी कवियों ने भी उनके द्वारा गृहीत व्यंग्य–शैली को ही अपने काव्य में मुख्य रूप से स्थान दिया।

भारतेन्दु युग से पूर्व रीतिकालीन कवि कल्पना लोक में विचरण करते थे। यथार्थ की जमीन ने उनके काव्य को स्पर्श नहीं किया था। भारतेन्दु तथा उनके सहयेागी कवियों ने प्रथम बार अपने चारों ओर फैली हुई राजनीतिक, समाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक अंसगतियों को गहराई से अनुभव किया तथा यथाशक्ति उनके उन्मूलन का भी प्रयास किया। अंग्रेजों की कट्टर नीति के कारण समसामयिक राजनीतिक औश्र आर्थिक विसंगतियों पर सीधे ही प्रहार करना उनके लिए सम्भव नहीं था, अतः व्यंग्य के माध्यम को अपनाना इस युग के कवियों की गहरी सूझबूझ थी। युग की विषमताओं और विकृतियों के प्रति जन–साधारण को जागृत करने के लिए, लोकगीतों में व्यंग्य को गूंथ देना उनकी उत्कृष्ट सुधारभावना का परिचाय है, क्योंकि जन–साधरण के जागरण के बिना कोई भी राष्ट्र उन्नत नहीं हो सकता हैं। भारतेन्दु ने 'स्यापा' और 'मुकरी', प्रतापनारायण मिश्र ने 'आल्हा' 'लावनी' और 'होली' तथा बालमुकुन्द गुप्त ने 'टेसू' के द्वारा राजनीतिक तथा अन्य विकृतियों पर प्रहार करके जनता की आखे खोली।

भारतेन्दु, प्रतापनारायण मिश्र और 'प्रेमधन' ने 'राजभक्ति' से पूर्ण कविताएं भी लिखीं। मुगल शासकों के अत्याचारपूर्ण नृशंस शासन के पश्चात् अंग्रेजों के वैज्ञानिक सुख–सुविधाओं से पूर्ण शासन ने भारतीयों के रिसते घावों पर मरहम का कार्य किया। उनकी आर्थिक शोषण नीति तथा कूटनीतिज्ञता का आभास, भरतीयों को बहुत बाद में धीरे–धीरे हुआ। इन कवियों ने इन राजभक्तिपूर्ण कविताओं में भी भारत की दीनहीन अवनत दशा का ही चित्रण किया है तथा अंगेज शासकों से उन दशा को सुधारने की प्रार्थना की हैं। युग की एक सामान्य धारा से अनुप्रमाणित होते हुए भी अपनी व्यक्तिगत विशिष्टताओं के अनुरूप इन कवियों के व्यंग्य के लक्ष्यों और रूपों में विभिन्नता रही। भारतेन्दु ने अंग्रेजों पर सीधे ही प्रहार न करके उनकी आर्थिक शोषण की नीति और भारतीयों के निरूद्योग, आलस्य और अकर्मण्यता पर ही चोट की हैं। भारतेन्दु और प्रताप नारायण मिश्र ने राजनीतिक लक्ष्यों पर प्रहार करने के लिए वैदग्ध्य औश्र विडम्बना का सहारा लिया। परन्तु बालमुकुन्द गप्त इसके अपवाद हैं। उन्होंने विभिन्न रूपों के द्वारा अंग्रेज लाटों के अनुचित कार्यों की धज्जियां उड़ाई हैं। भारतेन्दु तथा सभी अन्य कवियों ने भक्ति काव्य और रीति काव्य पद्धति पर भी बहुत सी कविताएं रचीं, परन्तु हिन्दी काव्य जगत में इन कवियों को महत्वपूर्ण स्थान दिलाने में, इनकी व्यंग्य–रचनाओं का ही योगदान हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. शर्मा, रामविलास, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, पृ0 17–19
2. गुप्त, किशोरी लाल, भारतेन्दु और अन्य सहयोगी कवि, पृ0 216
3. शर्मा, रामविलास, भारतेन्दु युग, पृ0 06
4. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, भारतेन्दु ग्रन्थावलो (दूसरा खण्ड), पृ0 810
5. शर्मा, रामविलास, भारतेन्दु युग, पृ0 95
6. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, भारतेन्दु ग्रन्थावली (पहला खण्ड), पृ0 470
7. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, भारतेन्दु ग्रन्थावली (पहला खण्ड), पृ0 661